मार्च 2018 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

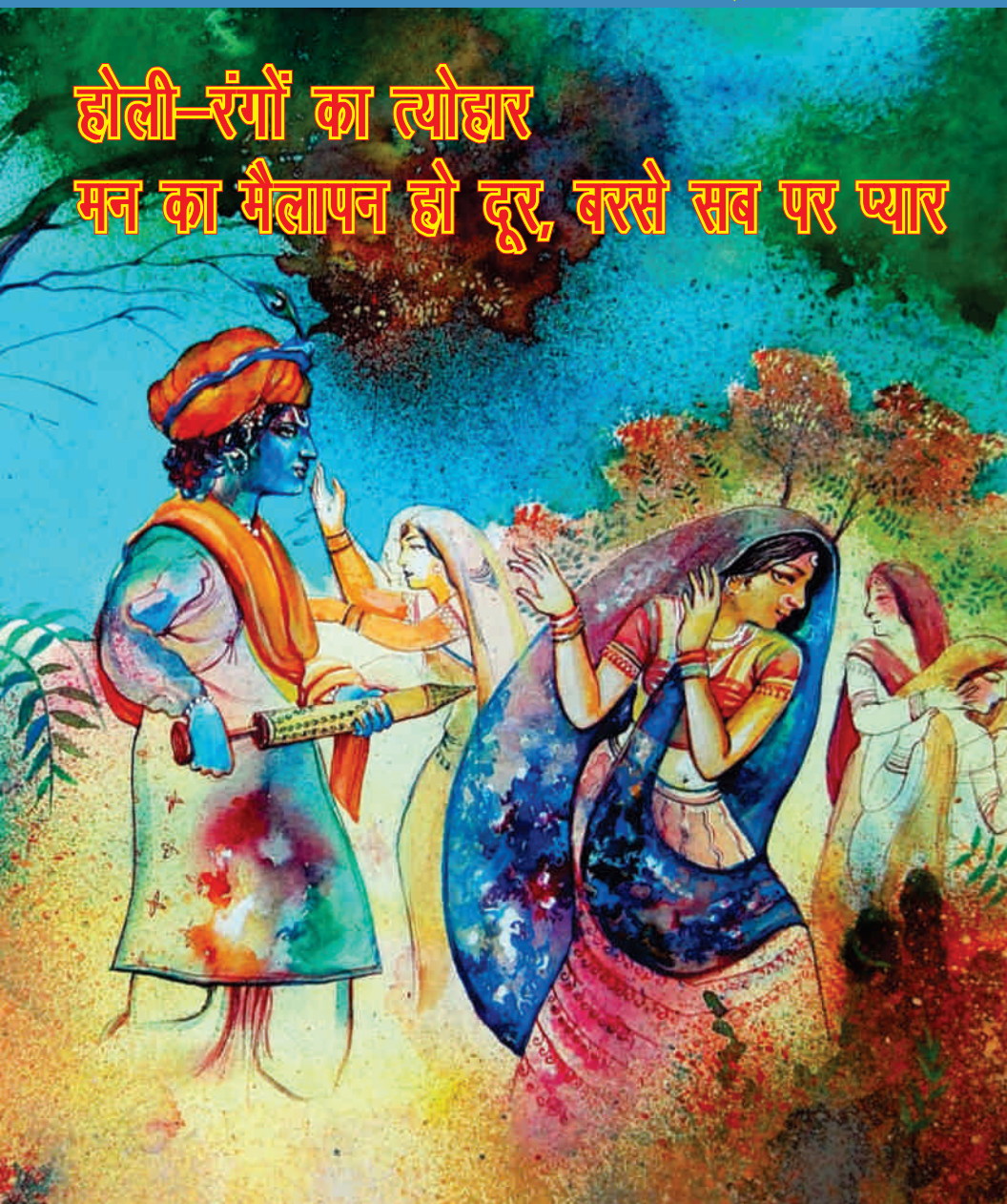

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
अरूण तिवारी
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

कार्य-कारण की एक साथ उपस्थिति का नाम है चमत्कार

अगर हमारी इन्द्रियां बीच से हट जाएं तो हम कली में फूल को देख सकते हैं। और तब चमत्कार घटित होगा। और उस चमत्कार की जो दुनिया है, उस चमत्कार की दुनिया में प्रवेश ही धर्म के विज्ञान का लक्ष्य है। 04

मदद और सेवा ही सच्ची पूजा है संसार में इससे बड़ा धर्म नहीं

दरअसल हम यहां भी सुविधा का खेल खेलते हैं। भगवान के सामने मांगने वाला भक्त और किसी आदमी के सामने मांगे तो भिखारी या याचक! यह दोहरा चरित्र है, जो हमारी जड़ों को खोखला कर रहा है। इस मानसिकता में अगर बदलाव ला सकें तो समाज का चेहरा गर्व करने लायक हो जाएगा। 05

श्रावक धर्म-मीमांसा

जिसके लिए ध्यान सहज हो वह ध्यान से अपनी आत्मा को विशुद्ध करे। जिसके लिए स्वाध्याय सहज हो वह स्वाध्याय से कर्म निर्जरण करे। जिसकी तपस्या में रुचि हो, वह तप करे। जिको सेवा में रस आता हो, वह सेवा में लग जाए। जिसकी धर्म-प्रचार की भावना हो, वह धर्म-संघ की प्रभावना में अपनी शक्ति का उपयोग करे। जिसको सहज जीवन और सद्भावना के विकास की विधि ज्ञात हो, वह उसमें लग जाए। 07

यह वसंत है परमानंद में लीन होने का समय

वसंत वह समय है जब शीत ऋतु खत्म होती है और क्षितिज पर प्रकाश दिखने लगता है। पेड़ों पर नई कोपलें और कलियां प्रकट होने लगती हैं और हवा बड़ी सुहावनी प्रतीत होती है। हमारे चारों ओर सुगंध होती है, मानो संपूर्ण वातावरण खुशी से झूम रहा हो। यह परमानंद का समय है। 18

संत-वाणी

हर डर गुरू डर गांव डर, डर करणी में सार।
तुलसी डरै सो ऊबरै, गाफिल खावै मार।।

बोध-कथा

संतों का एकांत

संतों की हर बात निराली होती है। एक बार की बात है। संत सफियान अपने अजीज मित्र संत फजील से मिलने गए। कई दिनों बाद हुई दोनों संतों की आत्मीय मुलाकात में कब दिन खत्म हुआ और कब रात सामने आकर खड़ी हो गई, पता ही नहीं चला। अध्यात्म चर्चा करते-करते पूरी रात बीत गई। सुबह सूरज की लाली फैली तो सफियान चलने के लिए उठे और संतुष्टि से पूर्ण स्वर में बोले- आज की रात मेरी सब रातों में सबसे अच्छी रही और आज की महफिल भी यादगार रही। यह सुनकर संत फजील गंभीरतापूर्वक कहने लगे- मेरी आज की रात सबसे बुरी रही और इस महफिल को तो यादों के पिटारे में बिल्कुल भी नहीं रखा जा सकता। सफियान हैरान रह गए और हैरत से पूछ बैठे- यह कैसे, जरा खुलकर बताइए। फजील समझाते हुए बोले- मेरे भाई, तमाम रात तुम इस फिक्र में रहे कि कोई ऐसी बात करो, जो मुझे पसंद आए और वह मेरे लिए यादगार लम्हा बन जाए। दूसरी ओर, मैं इस फिक्र में था कि तुम मेरे मेहमान बनकर आए हो तो मेरे मुंह से कोई अनहोनी बात ना निकल जाए। मेरी जुबान पर भी काबू रहे और मैं आपकी पसंदीदा बातें ही करूं। हम दोनों ही एक दूसरे की पसंदगी की फिक्र में खुदा से लापरवाह रहे। उसको एक पल भी याद ना किया। इससे अच्छा तो यही रहता कि हम एकांत में रहते। तब कम से कम अपने खुदा को याद तो करते। मुझे ऐसा एकांत पसंद है जहां कोई मेरे और ऊपर वाले के बीच में खलल न डाले और जहां मैं किसी झूठी प्रशंसा में अपना समय व्यतीत न करूं। मैं यह भी नहीं चाहता कि कोई मुझे अपनी प्रशंसा से खुदाई दर्जा दे। इसलिए कहता हूं मेरे भाई, हम संतों के लिए एकांत ही सबसे अच्छा है जहां हम अपने भगवान से सीधे संपर्क में रह सकते हैं।

कार्य-कारण की एक साथ उपस्थिति का नाम है चमत्कार

असली चमत्कार में भी कार्य-कारण का पता नहीं चलता, क्योंकि कारण और कार्य एक साथ उपस्थित हो जाते हैं।

अभी आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की एक प्रयोगशाला में बहुत हैरानी की आकस्मिक घटना घट गई। इससे चमत्कार को समझने में आसानी होगी। कुछ वैज्ञानिक एक कली का चित्र ले रहे थे। और चित्र कली का नहीं आया, फूल का आ गया। जिस फिल्म का उपयोग किया जा रहा था। वह अधिकतम सेन्सेटिव जो फिल्म आज सम्भव है, वह थी। अभी सामने कैमरे में कली ही थी, अन्दर जो चित्र आया, वह फूल का आया। स्वभावतः लगा कि कोई भूल हो गई। कली अभी भी कली थी, चित्र फूल का आ गया। लेकिन चित्र सुरक्षित रखा गया। समझा गया, कोई भूलचूक हो सकती है। पहले से कोई एक्सपोजर हो गया होगा। कोई किरण प्रवेश कर गई होगी। कोई केमिकल, रासायनिक भूलचूक हो गई होगी, या कुछ न कुछ गड़बड़ हो गया होगा।

चित्र को रखा गया संभालकर। जब कली फूल बनी, तब उसका दूसरा चित्र लिया गया। बड़ी हैरानी हुई, वह चित्र वही था, जो बाद में चित्र आया। दूसरा चित्र वही था, जो चित्र पहले आ गया था। उस प्रयोग को दुबारा दुहराना नहीं जा सका है। लेकिन इस बात की सम्भावना प्रकट हो गई है और जिस वैज्ञानिक के द्वारा यह घटना घटी है, उसको यह आस्था गहन हो गई है कि हम किसी न किसी दिन इतनी सन्सिटिव फिल्म तैयार कर लेगें कि जब बच्चा पैदा हो, तब हम उसके बुढ़ापे का चित्र ले लें। क्योंकि जो होनेवाला है, वह सूक्ष्म के जगत में अभी हो ही गया है। जो कल होने वाला है, उसकी होने की सारी प्रक्रिया सूक्ष्म के जगत में भी शुरू हो गई है। यह और गहन जगत में हो गई होगी, हम तक खबर पहुंचने में देर लगेगी। हमारी इन्द्रियां जब तक पकडेंगी, उसमें देर लगेगी। अगर हम बिना इन्द्रियों के पकड़ पाएं तो शायद अभी पकड़ लें।

शायद टाइम का, समय का जो गैप है, कली जब फूल बनती है तो कली और फूल के बीच जो फासला है, वह कली और फूल के बीच नहीं, वह हमारी इन्द्रियों और फूल के बीच है। अगर हमारी इन्द्रियां बीच से हट जाएं तो हम कली में फूल को देख सकते हैं। और तब चमत्कार घटित होगा। और उस चमत्कार की जो दुनिया है, उस चमत्कार की दुनिया में प्रवेश ही धर्म के विज्ञान का लक्ष्य है।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

○ रुचि आनंद

मदद और सेवा ही सच्ची पूजा है संसार में इससे बड़ा धर्म नहीं

एक नेत्रहीन भीड़ भरी सड़क को पार कर रहा था। उसे बीच में फंसा हुआ देखकर कुछ लोग मदद को आ गए और उन्होंने उस नेत्रहीन को सड़क पार करा दिया। उनमें से किसी ने टोका कि आपको दिखाई नहीं देता, किसी को साथ लेकर चलना चाहिए। उस नौजवान ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'मैं नहीं देख पा रहा हूं लेकिन भगवान तो हैं साथ में, जो मेरा हाथ पकड़कर हर रोज उस पार ले जाते हैं।'

एक व्यक्ति ने मजाक किया कि यहां भगवान हैं तो हमें दिखाई क्यों नहीं दे रहे हैं। नेत्रहीन ने जो जवाब दिया, उसे सुनकर हर किसी की आंखें शून्य में खो गईं। कहा, 'मैं अकेला हूं, हर दिन सामने मंदिर में प्रसाद खाने जाता हूं, उसी से मेरा जीवन चलता है। आपमें से कोई न कोई हर दिन मेरी मदद कर सड़क पार करा देता है, जिससे मेरी जान बच जाती है। मेरे लिए तो आप सब ही भगवान हैं।'

उस नेत्रहीन ने बातों-बातों में एक निचोड़ सबके सामने रख दिया। बता दिया कि आखिर धर्म होता क्या है। हमने पूजा-पाठ और पाखंड को धर्म का पर्याय बना दिया है। आज हर जगह विश्वास की जगह पर अंधविश्वास का कब्जा हो गया है। हम उसी की परिक्रमा करते जा रहे हैं। लेकिन उस नेत्रहीन ने मदद को प्रतिष्ठापूर्ण जगह पर पहुंचा दिया। उसे परमात्मा से जोड़ दिया। महावीर, बुद्ध, गांधी या मदर टेरेसा सबने हमेशा मदद या सेवा की बात की। हमारे यहां तो कहा ही जाता है कि मदद के लिए उठा हुआ हाथ हमेशा ऊपर होता है।

हम धर्मस्थलों में पुण्य के नाम पर हर साल करोड़ों-करोड़ रुपये चढ़ावा चढ़ाते हैं। भगवान की मूर्ति के समक्ष बोली लगाते हैं। उसका लाभ किसे मिलता है, यह पता नहीं। उसकी अपेक्षा अगर स्कूलों के निर्माण, बेहतर संचालन, बच्चों की पढ़ाई

में मदद करें तो न केवल समाज मजबूत होगा बल्कि देश भी खुशहाल होगा। हमने पाप-पुण्य की मान्यता को धर्म के तराजू पर रखकर मनुष्य को गौण कर दिया है। यह प्रवृत्ति अगर बदलती है तो निश्चित रूप से गांधीजी के आखिरी आदमी तक हम पहुंच कर उन्हें मुख्य धारा में शामिल कर पाएंगे।

आज के समय का एक बड़ा संकट यह है कि मदद की अवधारणा को अमीरी गरीबी से जोड़ दिया गया है। देने वाला अमीर और लेने वाला गरीब। ऐसा सोचते और बोलते हुए हम भूल जाते हैं कि भगवान के सामने तो हम सब कुछ न कुछ मांगने ही जाते हैं। वहां पहुंच कर तो अमीर-गरीब याद नहीं रहता। दरअसल हम यहां भी सुविधा का खेल खेलते हैं। भगवान के सामने मांगने वाला भक्त और किसी आदमी के सामने मांगे तो भिखारी या याचक! यह दोहरा चरित्र है, जो हमारी जड़ों को खोखला कर रहा है। इस मानसिकता में अगर बदलाव ला सकें तो समाज का चेहरा गर्व करने लायक हो जाएगा।

<u>सृष्टि परस्पर विश्वास से जुडी है</u>
<u>इसके टूटते ही अखंडता नहीं रहती</u>

उस वर्ष देवता जैसे कुपित हो गए थे। आषाढ़ बीता, सावन बीत गया लेकिन वर्षा की एक बूंद भी धरती पर नहीं गिरी। कुओं, सरोवर और नदियों का पानी सूखने लगा। वर्षा का इंतजार करते-करते लोगों के धीरज का बांध टूट गया। एक ही रास्ता बचा कि प्रभु से प्रार्थना करें। मंदिर में सामूहिक प्रार्थना के लिए लोग जुट गए। तभी सबकी नजर छाता लिए एक नन्हें बालक पर पड़ी। पूछने पर बालक ने निश्छल भाषा में कहा- अभी हम भगवान से वर्षा के लिये प्रार्थना करेंगे, इंद्र देवता प्रसन्न होकर पानी बरसाएंगे। वापस घर जाते समय बारिश में भीग न जाऊं, इसलिए छाता लाया हूं।

यह सुनकर लोग हंस पड़े कि कितना नादान है। इतना भी नहीं समझता कि ऐसी प्रार्थनाओं से कभी वर्षा हुआ करती है?मन में संशय भरा हुआ था। देखादेखी सब भगवान के सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। लेकिन बच्चे के कथन पर हंसते भी रहे। यह मनस्थिति केवल एक गांव की नहीं, लगभग पूरे धार्मिक और मानव समाज की है। ऊपर से प्रार्थनाएं चल रही है और भीतर से आशंकाएं दौड़ रही हैं। ऊपर से आस्थाएं चल रही हैं भीतर में संशयपूर्ण व्यथाएं चल रही हैं। यह दोहरी मानसिकता ही आदमी की सबसे बड़ी विडंबना है। कथा आगे चलती है। आसमान में बादल घुमड़ने लगे और बिजली कड़कने के साथ ही मूसलाधार

पानी बरसने लगा। लोग नाचने लगे। सबके मुंह पर एक ही बात थी कि प्रार्थना कितनी असरदार रही। कहते हैं, तभी आकाशवाणी हुई कि अपने और अपनी प्रार्थना पर घमंड मत करो। इस नन्हें बालक की प्रार्थना पर वर्षा भेजी गई हैं तुम्हारी प्रार्थना पर तो स्वयं तुम्हें ही विश्वास नहीं था। अनास्थापूर्ण प्रार्थना का कोई असर नहीं होता, चाहे पूरे धरती-आसमान को गुंजाने वाला ही क्यों न हो। कमी अगर है तो पुकार, आस्था, संकल्प और विश्वास की है। ईसा मसीह अपने शिष्यों से कहते हैं- मांगो और वह तुम्हें मिलेगा, खटखटाओ और तुम्हारे लिए खुलेगा, खोजो और तुम पा लोगे। कमी मांगने, खटखटाने और खोजने में है। ऊपर से मांग रहे हैं, लेकिन भीतर मिलने में संदेह है। फिर कोई मिले भी तो कैसे मिले? भीतर का संशय और अविश्वास ही हमें कहीं पहुंचने नहीं दे रहा है। महावीर तो यहां तक कहते हैं कि जहां संशय है, वहां ज्ञान भी नहीं होता।

आस्था स्वयं सुख है, संशय स्वयं दुख है। आस्था से ही विश्वास जुड़ा हुआ है। पूरी सृष्टि परस्पर विश्वास से जुड़ी हुई है। इसके टूटते ही सृष्टि की अखंडता टूट जाती है। संशय परमात्मा, आत्मा, धर्म आदि से ही नहीं तोड़ता, घर परिवार समाज और अपने आप से भी तोड़ता है।

मुक्तक

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

हर भक्त को डर है महाराज मुझसे रूठ नहीं जाए,
महाराज को डर है भक्त की आस्था टूट नहीं जाए,
मुझे डर है भक्त और महाराज की सौदेबाजी में,
कहीं सचाई को पाने का रास्ता ही छूट नहीं जाए।

तरस आ रहा धार्मिक जन कैसा जीवन जीता है,
मन में कपट-योजनाएं पर हाथों में गीता है,
जीव-दया के लिए छानकर पीता जो पानी को,
वही खून अनछाना लोगों का कैसे पीता है?

श्रावक धर्म-मीमांसा

○ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

धर्म अपने आप में एक और अखंड है। उसके साधु-धर्म, श्रावक-धर्म- इस तरह विभेद नहीं हो सकते, फिर भी व्यक्तियों की क्षमताओं के आधार पर धर्म की आचार-संहिता के भेद कर दिए जाते हैं।

यह भगवान महावीर की अपनी सूझ-बूझ रही है कि उन्होंने शक्ति-संपन्न व्यक्तियों के लिए अलग आचार-संहिता बनाई और स्वल्प विकसित शक्ति वालों के लिए अलग आचार-संहिता का निर्माण किया। यदि ऐसा नहीं होता तो स्वल्प शक्ति वालों के लिए धर्म का द्वार बन्द ही हो जाता।

भगवान् महावीर के विचार इस अर्थ में बहुत ही उदार रहे हैं कि व्यक्ति के बल, श्रद्धा, शक्ति, आरोग्य भावना, विचार और भिन्न-भिन्न क्षमताओं को देखकर विभिन्न धर्म-क्रियाओं का निरूपण किया। केवल साधु और श्रावक के रूप में ही भिन्न-भिन्न आचार-संहिता नहीं दी। किन्तु साधुओं में भी विभिन्न रुचि और सामर्थ्य वालों को विभिन्न साधना पद्धतियों का आलम्बन दिया। जिसके लिए ध्यान सहज हो वह ध्यान से अपनी आत्मा को विशुद्ध करे। जिसके लिए स्वाध्याय सहज हो वह स्वाध्याय से कर्म निर्जरण करे। जिसकी तपस्या में रुचि हो, वह तप करे। जिसको सेवा में रस आता हो, वह सेवा में लग जाए। जिसकी धर्म-प्रचार की भावना हो, वह धर्म-संघ की प्रभावना में अपनी शक्ति का उपयोग करे। जिसको सहज जीवन और सद्भावना के विकास की विधि ज्ञात हो, वह उसमें लग जाए। इसी तरह श्रावक लोगों में जो बारह व्रतों व ग्यारह प्रतिमाओं की साधना कर सके, वह उस रूप में करे।

जिसको व्रत, प्रत्याख्यान, तपश्चर्या, ध्यान, स्वाध्याय, दान, भावना आदि का सुअवसर प्राप्त नहीं हो सकता वह कम से कम सद्भावना का विकास कर अपने

जीवन को धर्माराधना में लगाए। जो व्यक्ति साधु नहीं बन सकता उसके लिए धर्म के द्वार बन्द हो गए या जो श्रावक के बारह व्रत स्वीकार नहीं कर सकते, उनके लिए धर्म निरर्थक हो गया, ऐसी बात जैन साधना पद्धति में नहीं है।

भगवान् महावीर ने श्रावक के लिए बारह व्रत जिनमें दान, शील, तप भावना की पुट है, निर्धारित किए।

भगवान् के अन्तेवासी उपासक आनन्द आदि ने इन्हीं बारह व्रतों की निरतिचार आराधना कर अन्त में धर्म-जागरणपूर्वक संलेखन व अनशन किया और मोक्ष धर्म की आराधना की।

श्रावक के बारह व्रत निम्न हैं-

(1) अहिंसा (2) सत्य (3) अचौर्य (4) स्वदार सन्तोष (5) इच्छा परिमाण (6) दिग्व्रत (7) उपभोग-परिभोग विरति (8) अनर्थ दण्ड विरति (9) सामायिक (10) देशावकाशिक (11) पौषध (12) अतिथि-संविभाग।

आज आचार्यश्री तुलसी ने द्रव्य-काल-भाव-परिस्थिति को देखते हुए उन बारह व्रतों का अणुव्रत के रूप में नवीनीकरण कर दिया है।

अब वे अणुव्रत केवल जैन धर्म-अनुयायी श्रावकों के लिए ही नहीं, उन सभी के लिए आचरणीय बन गए हैं जिनका आत्म-शुद्धि में विश्वास है।

अणुव्रत का उद्देश्य है- जाति, धर्म, भाषा, लिंग, रंग, वर्ग आदि भेदभावों से ऊपर उठकर मानव मात्र का कल्याण।

अणुव्रत का कार्य है परंपरावादी धर्म को प्रयोगात्मक रूप देना। अणुव्रत की निष्पत्ति है नैतिक और प्रामाणिक जीवन का निर्माण।

अणुव्रत की पद्धति है- हृदय-परिवर्तन। अणुव्रत का प्रचार मात्र विचार-शुद्धि, भावना, विकास और आचरण की पवित्रता के लिए है।

समाज में व्याप्त कुरूढ़ियों, अन्धविश्वासों, आडम्बरों, दिखावा, प्रदर्शनों, मिथ्या मानदंडों के निर्वहन आदि को मिटाना अणुव्रत का प्रमुख कर्तव्य है। क्योंकि ये ही धार्मिक जीवन की सबसे बड़ी बाधा है।

गृहस्थों और श्रावकों के लिए इतनी विस्तृत, सुव्यवस्थित और व्यवहार्य साधना पद्धति का विवेचन अन्यत्र दुर्लभ है।

कामी, जुवारी, चोर के, नहीं बैठिये पास।
धर्म और ईमान पर, करो पूर्ण विश्वास।।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता

गतांक से आगे-

मुनि जी ने अनुभव किया कि मोमासरवासियों की बड़ी इच्छा है कि वहां दीक्षा समारोह हो। प्रवचनों आदि में तो ग्रामवासी बढ़-चढ़ कर आते ही। तीसरे दिन प्रवचनों के उपरान्त गाँव के कई प्रमुख लोगों ने खड़े होकर आचार्यश्री से दीक्षा महोत्सव की याचना की। वहीं कुछ दूरी पर बैठे मुनि जी के मन में उत्सुकता थी कि गुरूदेव क्या कहते हैं? क्या यहां भी सरदारशहर की तरह दीक्षा समारोह होगा? हमारी ही तरह कुछ और भी लोग नवदीक्षितों की पंक्ति में शामिल होंगे। उन्होंने देखा कि आचार्यश्री किसी न किसी तरह इस प्रसंग को टालना चाहते हैं। शायद इसी दृष्टि से अंतिम अस्त्र के रूप में आचार्यश्री ने उन याचकों से पूछा, 'आप दीक्षा की बात करते हैं, पहले यह तो बताइए, दीक्षा लेने वाला कौन है?' प्रश्न सुनकर सब एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। कुछ पल की चुप्पी के बाद श्रावकों के बीच बैठा एक किशोर खड़ा हुआ और बोला।, 'गुरूदेव! मैं तैयार हूं। आप दीक्षा की कृपा करें।'

मुनि जी समेत सभी उपस्थितजन का ध्यान उस किशोर पर केन्द्रित हो गया। स्थानीय श्रावक जालमचन्द पटावरी का पौत्र और भोजराज जी पटावरी का पुत्र किशनलाल सैंकड़ों लोगों के बीच आचार्यश्री से दीक्षा की गुहार कर रहा था। मुनि जी ने देखा, किशनलाल तो उनकी आयु का है। दो-तीन दिन में उनको यह तो पता चल गया था कि मोमासार के कुछ प्रतिष्ठित परिवारों में पटावरी परिवार का स्थान है। संघ और संघपति के प्रति पूर्णतः समर्पित। परिवार के संस्कारों का ही प्रभाव रहा होगा कि किशोर किशनलाल दीक्षा के लिए खड़ा हो गया। मुनि जी भी जानते थे कि आचार्यश्री इतनी आसानी से किसी को

दीक्षा नहीं देते। पूरी जाँच-परख के बाद ही ऐसे किसी निर्णय पर पहुँचते हैं। मुनि जी के अपने साथ भी तो ऐसा ही हुआ था। आचार्यश्री ने उस किशोर से अकेले में भी बात की। उसके विचारों में दृढ़ता थी। यह देख आचार्यश्री ने प्रतिक्रमण सीखने का निर्देश दिया। श्री डूँगरगढ़ विहार से लौटते समय वापस मोमासर में दीक्षा का निर्णय लिया। वहां सोलह दिन प्रवास के बाद आचार्यश्री के काफिले ने आडसर, श्री डूँगरगढ़ की ओर प्रस्थान किया।

मुनि जी के लिए यह पहला विहार था। बहुत ज्यादा पैदल चलने की आदत नहीं थी। फिर भी छह-सात किलोमीटर चलना पता नहीं लगता था। उसके बाद पाँव जबाब देने लगते थे, किन्तु आचार्यश्री के आगे आगे चलते थे इसलिए अपने थके पाँवों को भी मना लेते थे।

श्री डूँगरगढ़ पहुँचने पर भव्य स्वागत हुआ। मुनि जी के लिए सब शहर-गाँव नए थे। इसलिए जिज्ञासु मन में नए अनुभव ग्रहण करने की लालसा थी। श्री डूँगरगढ़ में बींजराज जी पुगलिया की हवेली में आचार्यश्री और उनके साथ आए साधुओं ने प्रवास किया। प्रवचन महालचन्द भादानी के नोहरे में था।

मुनि जी रोज ध्यान से आचार्यश्री के प्रवचन सुनते। अनेक प्रश्न उनके मन में आते, जिनका समाधान वे आचार्यश्री से चाहते थे। जिज्ञासु और प्रबुद्धमुनि रूपचन्द्र के मन में कोई हिचक नहीं थी। बस ऐसे ही दोपहर के समय एक दिन आचार्यश्री से पूछ बैठे-

'गुरूदेव, दीक्षा लेते समय और बाद में भी सब साधु-साध्वियों से कहा जाता है कि सब एक गुरू के शिष्य बन कर रहेंगे। कोई अपना शिष्य नहीं बना सकता।'

आचार्यश्री ध्यान से मुनि जी की बात सुन रहे थे। 'आचार्यश्री, अगर साधु-साध्वियों के लिए शिष्य न बनाने का नियम है तो आप सबको दीक्षा देकर अपना शिष्य क्यों बनाते हैं?'

किशोर मन में उठा प्रश्न वाजिब था। आचार्यश्री ने प्रश्न का उत्तर सहजता से दिया- 'यह बात सच है कि साधु-साध्वियों को किसी और को अपना शिष्य बनाने का प्रावधान नहीं, लेकिन जब इन्हीं साधु-साध्वियों में से जिनको आचार्य की पदवी मिल जाती है, वे किसी को दीक्षा दे सकते हैं और अपना शिष्य बना सकते हैं।' अपनी शंका का समाधान पाकर मुनि जी प्रसन्न मन अपने स्थान पर लौटे।

श्री डूँगरगढ़ में प्रवचनों के समय महाल चन्द भादानी के नोहरे में हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती थी। एक दिन प्रवचन के समय तीन योगों की चर्चा चल निकली। मुनि जी बड़ी उत्सुकता से चर्चा सुन रहे थे। आचार्यश्री

बता रहे थे-

'साधु अपने मुँह पर मुखवस्त्रिका रखते हैं। अहिंसा और स्वास्थ्य दोनों दृष्टियों से उसकी उपयोगिता है। गृहस्थ के खुले मुँह बोलने का त्याग नहीं होता। वह साधु के साथ बात करते समय मुखवस्त्रिका, रूमाल आदि से 'जयणा' रख सकता है। खुले मुँह भी बोल सकता है। वह बोलते समय 'जयणा' रखे, यह बात उसे समझायी जा सकती है, थोपी नहीं जा सकती। ऐसी स्थिति में साधु उससे बातचीत करे या नहीं? यह एक प्रश्न है। इस संदर्भ में हमारा चिन्तन स्पष्ट है। मैं स्वामीजी (आचार्य भिक्षु) के विचारों को जहाँ तक समझ पाया हूँ- तीनों योगों-मन, वचन और काय के व्यापार अलग-अलग हैं। जहां वचन योग अशुभ हो, वहां मनोयोग और काययोग शुभ हो सकते हैं। काययोग शुभ हो, वहां मनयोग और वचन योग अशुभ हो सकते हैं। तीनों योग शुभ या अशुभ हों, यह आवश्यक नहीं है। कोई श्रावक साधु को वन्दन करने के लिए जाता है। उस समय उसका मनयोग शुभ हो सकता है तो वचन योग एवं काययोग अशुभ भी हो सकते हैं। कभी काययोग और वचनयोग शुभ हो सकते है। मनयोग अशुभ हो सकता है। कभी तीनों योग शुभ हो सकते हैं। शुभ योग की प्रवृत्ति एकान्त निर्जरा धर्म है, और अशुभ योग प्रवृत्ति पाप है। इस प्रकार एक क्रिया करते समय तीनों योगों की प्रवृत्ति अलग-अलग हो सकती है।'

मुनि जी चर्चा में रस ले रहे थे। उस दिन यही चर्चा चलती रही। नोहरे से श्रावक-श्राविकाओं के जाने के बाद मुनि जी के मन में तीनों योग घूमते रहे और वे विश्लेषण में डूब गए कि कब मनयोग शुभ होता है और वचन योग, काययोग अशुभ। क्या सदैव तीनों योग शुभ नहीं हो सकते?

यह मंथन चल ही रहा था कि पता चला साधु-साध्वियां गोचरी लेकर आ गए हैं। सभी आहार के लिए बैठे। मुनि रूपचन्द्र के पात्र में उस दिन बैंगन की सब्जी दी गई। मुनि जी उस सब्जी को देखकर सोच में पड़ गए कि खायें या न खायें। इस सब्जी को वह बहुत पहले ही त्याग चुके थे। लेकिन साधु को वही आहार करना होता हैं, जो गोचरी में मिला होता है। अजब उधेड़बुन में पड़ गए। आचार्यश्री दूर से देख रहे थे कि मुनि रूपचन्द्र भोजन-पात्र के समक्ष उधेड़बुन में हैं। कुछ खा नहीं रहे। उन्होंने पूछा, 'क्या बात है, मन ठीक नहीं है क्या?'

अचकचा कर मुनि जी ने आचार्यश्री की ओर देखा और बोले, 'गुरूदेव आज मेरे पात्र में बैंगन की सब्जी है। मैं इसे कैसे खाऊं, इसे तो मैं त्याग चुका हूँ दो साल पहले।' शंका का समाधान करते हुए आचार्यश्री ने कहा, 'इसे खाना तुमने दीक्षा से पहले छोड़ा था। लेकिन दीक्षा लेने के

बाद तुम्हारा नया जीवन आरंभ हो गया है। अब नए जीवन के नियम-धर्म पालन करने चाहिए। जब जीवन नया है। नया बाना है तो उस पर पिछला कुछ आरोपित नहीं होता। तुम इसे आहार में ग्रहण कर सकते हो।' मुनि जी गुरूदेव के तर्क से संतुष्ट हो गए। और उन्होंने दो साल बाद आहार में बैंगन की सब्जी ग्रहण की।

x x x

श्री डूँगरगढ़ से वापस सरदारशहर में माघ महोत्सव के लिए विहार प्रारंभ हुआ। मौसम में ठंडक उफान पर थी। रेगिस्तान की धरती पर रेत के टीलों को चीरती हुई हवा तीर की तरह चुभती थी। अन्य साधुओं की तरह बालक मुनि रूपचन्द्र ने भी शरीर पर सिर्फ दो वस्त्र धारण किए हुए थे। एक श्वेत चादर जैसा वस्त्र बनियान की तरह सीने पर बँधा होता और एक चादर शाल की तरह ऊपर के शरीर को ढँकती। आचार्यश्री के काफिले में आगे-आगे चलते बाल-मुनियों मनोहर मुनि और मुनि रूपचन्द्र के पाँवों की गति में भीतर का उत्साह स्पष्ट झलकता था। छोटे-छोटे पाँव बर्फ सी ठंडी रेत में छह-छह इंच तक धँस जाते, श्रमपूर्वक मुनि जी पाँव उठा कर कदम बढ़ाते, फिर रेत उन्हें अपने पास बिठा लेना चाहती। बर्फीली रेत में अगला कदम रखते ही पूरे शरीर में कँपकँपी दौड़ जाती। रेत में से अपना पाँव निकालते ही मुनि जी की नजर पाँव के आकार के उस ताजा बने गड्ढ़े पर जरूर जाती, मन पुलक से भर उठता और अगले गड्ढे की बात सोचता। रेतीली बर्फ से खेल में कब रास्ता तय हो जाता पता नहीं लगता। लगातार विहार से शरीर में उष्मा का वास रहता। भोर में ही आचार्यश्री का काफिला विहार प्रारंभ करता और दोपहर तक किसी न किसी पड़ाव पर गाँव में रुकता। सूरज की किरणें रेतीली, बर्फीली धरती को चूमतीं तो थोड़ी राहत मिलती। ऐसी ही कड़कड़ाती ठंड में विहार करता हुआ आचार्यश्री का काफिला सरदारशहर पहुँच गया माघ महोत्सव के लिए। मुनि जी प्रथम विहार के बाद अपनी जन्म-स्थली सरदारशहर लौट आए थे। जल का प्रवाह और संत कब रुके हैं। माघ महोत्सव से पहले ही तय हो चुकी थी जोधपुर की यात्रा। फाल्गुन कृष्णा षष्ठी, विक्रम संवत दो हजार नौ के दिन सरदारशहर से प्रस्थान हुआ। विदाई के समय मुनिजी के परिवारीजन और उनके माता-पिता भी थे। वे सब अब राग-मुक्त हो चुके थे। मुनि जी को देखकर उनके मन में आसक्ति का लेशमात्र भी न रह गया था।

x x x

क्रमशः

मन्त्र कैसे प्रभावी हुआ?

○ साध्वी मंजुश्री

महामन्त्र के प्रत्यक्ष चमत्कार को बताती घटना का उल्लेख, इस गाथा वाक्य को प्रमाणित कर रहा है-

'जह अहिणा दहनां, गारुड मंत्ता विसं पणासेई
तह नवकारे मंत्ता, पाव विसं नासेई असेसं'

जैसे-गारुड़ मन्त्र सर्प दंश विष का नाश करता है। वैसे ही नवकार मन्त्र पाप-विष को सर्वथा नष्ट करता है।

आसाम में एक मुसलिम बन्धु रहता है। उसका सम्पर्क महामन्त्र के जानकार संत से हुआ। सन्त ने दुख/संकट में काम आने वाला तथा सामान्य जीवन में सुख व मन को शान्ति देने वाला मंत्र दिया। साथ ही आस्थापूर्वक जाप करते रहने का निर्देश दिया।

संत से मंत्र प्राप्त कर मुसलिम बन्धु प्रसन्न हुआ। अचल आस्था पूर्वक हर दिन जाप करने लगा। अन्य मुसूलिम बन्धुओं ने उसे काफिर भी कहा। तब भी उसने मंत्र-जाप नहीं छोड़ा। धीरे-धीरे नवकार जाप में आनन्द आने लगा तो यही जाप अजपाजाप बन गया। सोते-जागते हर क्षण ही उसका जप चलने लगा। एक दिन उसके बन्धु-बाधवों में से किसी ने विषैला सर्प उसकी खाट के नीचे चुपचाप छोड़ दिया। कमरे के द्वार बन्द कर दिये।

उसने देखा, उसकी खाट पर सांप चढ़ा बैठा है। उसने पूरी आस्था से उसे नमस्कार मंत्र सुनाया। सांप तुरन्त जैसे मंत्र सुनने की बाट देख रहा हो- चुपचाप चला गया। मियां अपनी खाट पर निर्भय होकर आराम से सो गया।

रात बारह बजे एक मियां चीखता-बिलखता उसके पास आया। वह माफी मांगता हुआ बोला- 'मुझे माफ कर दो, मियां! तुम्हारे कमरे में मैंने ही सांप छोड़ा था। अब तो मेरी जान पर बन आयी है। मेरे लड़के को सर्प ने काट लिया है। उसे बचाओ। उसे नयी जिन्दगी दो। भाई, मैं तुम्हारा ताजिन्दगी अहसानमन्द रहूंगा।'

मियां फरियाद करने वाले मियां के घर गया। मात्र तीन बार महामन्त्र पढ़ा। लोटे में भरे पानी को आमन्त्रित कर उस पानी से सर्प काटे लड़के पर छिड़का। लड़का स्वस्थ हो गया।

उक्त घटना में महामन्त्र का प्रत्यक्ष बाह्य चमत्कार है। आन्तरिक उपलब्धि, आत्म-शुद्धि, कर्म-मुक्ति और कर्म-निर्जरा है।

रंग बिरंगी होली

होली के त्यौहार में अभी पांच दिन शेष थे। लेकिन छोटू बंदर तो मारे खुशी के अभी से रंग घोलकर सभी जानवरों पर डालने लगा था। फिर चाहें कोई जानवर उसे कितना भी समझाए वह रंग डालकर कपड़े खराब करने के बाद ही मानता था।

आज तो कमाल ही कर दिया उसने। बिट्टू खरगोश नए कपड़े पहने किसी काम से बाजार जा रहा था। छोटू भी मौके की तलाश में था, क्योंकि आज सुबह से उसे कोई भी जानवर रंग डालने को नहीं मिला था। बिट्टू को दूर से अपनी ओर आता देखकर छोटू की बांछें खिल गई। 'चलो आज इसकी बारी ही सही', कहकर रंगवाला डिब्बा लेकर छोटू पेड़ की ओट में छिप गया।

बिट्टू मस्ती में गाना गाता हुआ जैसे ही पेड़ से आगे बढ़ा कि तुरंत ही छोटू ने चुपचाप पीछे जाकर उसके सिर के ऊपर से पानी में घुला रंग डाल दिया। फिर जोर से ताली बजाकर चिल्लाने लगा- होली है भई होली है रंग बिरंगी होली है। छोटू की इस शरारत से बिट्टू को उस पर बहुत गुस्सा आया उसने गुस्से में अपनी मुट्ठी भींचते हुए कहा- यह तूने बहुत बुरा किया है छोटू! जानता है आज मेरा जन्मदिन है और तूने मेरे नई कीमती कपड़ों पर रंग डालकर खराब कर दिया।

'भई वाह क्या खूब कही? होली के त्यौहार पर कोई रंग नहीं तो क्या फूल बरसाएगा? और फिर जब तुझे रंग से इतनी ही चिढ़ है तो घर से बाहर ही क्यों निकला? वह भी नए कपड़े पहनकर। छोटू ने अपना तर्क देकर कहा। इतना सुनकर बिट्टू छोटू के और मुंह लगना ठीक न समझकर घर की ओर लौट गया। उसकी इस शरारत की घटना पूरे जंगल में आग की तरह फैल गई।'

सभी जानवर पहले से ही उसकी

हरकतों से परेशान थे, अब सब जानवरों ने एक राय होकर उसे सबक सिखाने की योजना बनाई। योजनानुसार हाथी दादा के सहयोग से बीच जंगल में एक गड्ढा खोदा गया लगभग छोटू के कंधों तक गहरा।

दो दिन के अथक परिश्रम से सभी जानवरों की मेहनत रंग लाई। फिर उसे गड्ढे में खूब सारा पानी भर दिया गया। पर्याप्त मात्रा में भर जाने पर उसमें खूब सारा रंग सभी जानवरों ने बाजार से ला-लाकर डाला। गड्ढे को पत्तियों से अच्छी तरह ढक दिया गया। अब जरूरत थी तो बस छोटू के गिरने के इंतजार की।

इसका भी उपाय खोज लिया गया। होली से ठीक एक दिन पहले जंगल में दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दौड़ में प्रथम स्थान पाने वाले जानवर को 500 रू. इनाम दिए जाने की घोषणा की गई। सभी जानवरों को पता था कि छोटू इस दौड़ में हिस्सा जरूर लेगा, क्योंकि वह ऐसी कई प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर पुरस्कार जीत चुका था। मनसुख भालू ने जब यह बात छोटू को बताई तो वह झट से इस आयोजन में हिस्सा लेने को तैयार हो गया।

दौड़ वाले दिन सभी जानवर भागने को तैयार खड़े थे। छोटू भी घमण्ड में चूर होकर पूरी तैयारी से घण्टी का इंतजार कर रहा था। घण्टी बजते ही सारे जानवर तेज गति से दौड़ पड़े। छोटू भी सबसे आगे निकलने की होड़ में तीव्र गति से दौड़ रहा था कि अचानक उसका पैर घास फूस से ढके गड्ढे पर पड़ा और असंतुलित होकर उसमें जा गिरा। एक पल के लिए उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसके साथ यह हो क्या रहा है? उस गड्ढे में वह पूरा रंग बिरंगा हो गया था व कई गोते उसे लग चुके थे। सभी जानवर चारों और से उसे रंगा देखकर तालियां बजा बजाकर हंस रहे थे। होली है, भई होली है रंग बिरंगी होली है। आज छोटू को अहसास हो रहा था दूसरों को कष्ट देने का। हाथ जोड़कर माफी मांगकर वह सभी से बोला- मित्रों! मुझे क्षमा कर दीजिए। मैंने आप लोगों को बहुत सताया है। मुझे इस गड्ढे से बाहर निकालिए वरना मैं डूबकर मर जाऊंगा।' उसके प्रायश्चित से सभी जानवरों को उस पर दया आ गई। उसे सबक सिखाना ही उनका उद्देश्य था उसे कोई गंभीर हानि न हो इसकी पूरी सावधानी भी रखी गई थी। हाथी दादा ने नजदीक आकर अपनी सूंड से पकड़कर उसे बाहर निकाला।

उसने पुनः सभी से क्षमा मांगते हुए वचन दिया कि अब वह भविष्य में कभी किसी जानवर को बेवजह तंग नहीं करेगा। अब छोटू पूरी तरह बदल चुका था। सारे जानवरों ने उसे बारी-बारी से गले लगाकर होली की शुभकामनाएं दी।

प्रस्तुति : मानसी जैन

ईशान मुखी भवन

जिस भवन के मुख्य द्वार के सामने ईशान दिशा (उत्तर पूर्व दिशा) की ओर मार्ग होता है ऐसे भवन को ईशान मुखी भवन कहा जाता है। इस तरह के भवन के शुभ-अशुभ के परिणाम का प्रभाव सीधे गृह स्वामी एवं उसकी संतान पर पड़ता है। वास्तु शास्त्र में ईशान दिशा को बहुत ही शुभ लेकिन संवेदनशील माना जाता है। हमारे प्राचीन वास्तुशास्त्रियों ने ईशान मुख के भवन भूखण्ड की तुलना कुबेर देव की नगरी अलकापुरी से की है।

अगर इस तरह का भवन वास्तु की अनुरूप हो तो यह धन, यश, वंश, धर्म, सद्बुद्धि आदि की वृद्धि अर्थात सभी प्रकार से शुभ फलों को प्रदान करने वाला होता है। लेकिन ध्यान रहे कि जहाँ इस दिशा के भवन बहुत ही लाभदायक होते है वहीं इस दिशा के भवन में वास्तु दोष का सबसे अधिक कुप्रभाव भी पड़ता है जिससे भवन में रहने वाले व्यक्तियों की उन्नति बिलकुल रुक सी जाती है। ईशान मुखी भवन में निवास करने वाले अगर यहाँ पर बताये गए वास्तु के नियमों का पालन करेंगे तो उन्हें निश्चय ही सदैव शुभ फलों की प्राप्ति होती रहेगी।

ईशान मुखी भवन का मुख्य द्वार सदैव ईशान, पूर्वी ईशान अथवा उत्तर दिशा की ओर ही रहना चाहिए।

ईशान मुखी भवन में सामने की ओर रिक्त स्थान अवश्य ही होना चाहिए। यह दिशा बिलकुल साफ होनी चाहिए। इस दिशा में किसी भी तरह का कूड़ा कचरा, गन्दगी का ढेर नहीं होना चाहिए अन्यथा शत्रु हावी हो जाते है और अपयश का सामना भी करना पड़ सकता है।

ईशान मुखी भवन में पश्चिम दिशा की अपेक्षा पूर्व में और दक्षिण दिशा की अपेक्षा उत्तर में अधिक खाली स्थान छोड़ने से भवन में रहने वालों को स्थाई रूप से धन ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

ईशान मुखी भवन की ढाल उत्तर अथवा पूर्व की ओर ही होना चाहिए। पूर्व दिशा की ओर की ढाल पुरुष के लिए एवं उत्तर दिशा की ओर ढाल स्त्रियों के लिए लाभप्रद होता है। अर्थात भवन की ढाल इसके विपरीत दक्षिण अथवा पश्चिम की ओर कदापि नहीं होना चाहिए।

भवन का ईशान कोण किसी भी दशा में कटा हुआ या ऊँचा नहीं होना चाहिए। यह भवन के सभी कक्षों में ध्यान रखना चहिये।

ईशान मुखी भवन के सामने यदि नीचा स्थान होता है तो इससे धन लाभ की प्रबल

सम्भावना बनती है।

ईशान मुखी भवन में आगे की तरफ चारदीवारी पीछे की तरफ की चारदीवारी से सदैव नीची होनी चाहिए। इस दिशा के भवन में नैऋत्य कोण, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में क्रमशः ईशान, उत्तर एवं पूर्व से ऊँचा निर्माण रहना चाहिए।

ईशान मुखी भवन में प्रयोग किया जल यदि ईशान कोण से ही बाहर निकाला जाय तो भवन स्वामी के वंश में वृद्धि होती है, संतान योग्य, आज्ञाकारी होती है साथ ही इस तरह के भवन में किसी भी तरह का अभाव नहीं रहता है। ईशान मुखी भवन में यदि पूर्व की तरफ विस्तार हो उस भवन में रहने वालो को यश एवं धर्म प्राप्त होता है। ईशान मुखी भवन में यदि उत्तर की ओर विस्तार हो तो उस भवन में रहने वालो को धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। ईशान मुखी भवन के अगर उत्तर की दिशा में ऊँचा भवन हो तो यह अशुभ माना जाता है। इससे उस घर में रहने वाली स्त्रियों का स्वास्थ्य खराब रह सकता है एवं उत्तर दिशा के ऊँचे होने से घर में धन की भी कमी बनी रह सकती है। इसके उपाय स्वरूप आप अपने भवन के नैऋत्य कोण को यथासंभव उस भवन से ऊँचा करवा लें। इस दिशा में कोई ऊँचा ऐन्टीना भी लगवा लेना चाहिए।

इसके अतिरिक्त यदि संभव हो तो आप उस भवन और अपने भवन के बीच एक मार्ग बना लें चाहे उसके लिए आपको अपनी जमीन ही क्यों ना छोड़नी पड़े इससे ऊँची ईमारत के कारण हुआ द्वार वेध के दुष्परिणाम समाप्त हो जायेंगे। इसी तरह यदि ईशान मुखी भवन के सामने अथवा पूर्व में किसी का कोई ऊँचा निर्माण हो तो उसके कारण भी भवन स्वामी एवं उसके पुत्र पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके उपाय स्वरूप भी भवन स्वामी को ऊपर बताया गया उपाय ही करना चाहिए।

अर्थात अपने भवन के नैऋत्य कोण को यथासंभव उस भवन से ऊँचा करवाकर इस दिशा में कोई ऊँचा ऐन्टीना लगवा लेना चाहिए। और पूर्व के ऊँचे भवन और अपने भवन के बीच एक मार्ग बनाना चाहिए। इससे ईशान अथवा पूर्व की दिशा में ऊँची ईमारत के कारण हुए द्वार वेध के दुष्परिणाम समाप्त हो जायेंगे।

ईशान मुखी भवन में ईशान, उत्तर एवं पूर्व की दिशा की चारदीवारी से सटा कर निर्माण कदापि नहीं करना चाहिए और ना ही भूलकर भी पश्चिम, दक्षिण और नैत्रत्य दिशा में खाली स्थान छोड़कर निर्माण करना चाहिए, ऐसा होने पर भवनवासियों को कर्ज, दरिद्रता के साथ साथ आकस्मिक दुर्घटना का भी सामना करना पड़ सकता है। इसके उपाय स्वरूप दक्षिण और पश्चिम दिशा की चारदीवारी से सटा कर पूर्व एवं उत्तर दिशा से ऊँचा निर्माण कराएं।

प्रस्तुति : अरूण योगी

यह वसंत है परमानंद में लीन होने का समय

○ संत राजिन्दर सिंह

वसंत वह समय है जब शीत ऋतु खत्म होती है और क्षितिज पर प्रकाश दिखने लगता है। पेड़ों पर नई कोपलें और कलियां प्रकट होने लगती हैं और हवा बड़ी सुहावनी प्रतीत होती है। हमारे चारों ओर सुगंध होती है, मानो संपूर्ण वातावरण खुशी से झूम रहा हो। यह परमानंद का समय है।

बैसाखी का त्योहार सर्दी के अंत में और वसंत बुवाई के मौसम के शुरू में पड़ता है। यह खुशी और उल्लास का समय है। संत दर्शनसिंह जी बताते थे कि आध्यात्मिक दृष्टि से यह ऐसा समय है जब हम विशेष तौर से प्रभु से मिलने के लिए प्रेरित रहते हैं। प्रभु हमारा अमर प्रीतम है और हम, आत्माओं के रूप में, प्रभु की प्रेमिकाएं हैं। आत्मा के रूप में, हमें अपने अमर प्रीतम, प्रभु में लीन होना है, उसमें अभेद होना है।

उस अवस्था में पहुंचने के लिए, जहां हर प्रभु से जुड़ सकें, महात्मा गण हमें सदाचारी जीवन जीने के लिए कहते हैं, जो कि रूहानियत को पाने की सीढ़ी है। वे समझाते हैं कि हम अहिंसा, नम्रता, पवित्रता, सचाई और दया का जीवन जिएं ताकि अपने आस-पास के सभी लोगों को खुशी दे सके। वे समझाते हैं कि हम ऐसी जिंदगी न जिएं जिससे दूसरों की जिंदगी में मुसीबतें पैदा हों। जब ऐसा जीवन यापन करते हैं तो हम आसानी से अपने मन को स्थिर कर सकते हैं, आसानी से ध्यान टिका सकते हैं।

सदाचारी जीवन और ध्यान-अभ्यास साथ-साथ चलते हैं और वे एक-दूसरे को बेहतर करते हैं। जब हम ध्यान टिकाते हैं और सचाई का अनुभव करते हैं, तब स्वतः हमारी जिंदगी सदाचारी बन जाती है। जब हम सदाचार से जीते हैं तो हमारे ध्यान-अभ्यास में बेहतरी होती है। सदाचारी होने से, हम अपने मन को आसानी से स्थिर कर पाते हैं ताकि अपने अंतर में रूहानी यात्रा पर जा सकें।

वसंत की शुरुआत के दिन, हमें यह समझ लेना चाहिए कि जो कुछ अतीत में हो चुका, वह तो हो चुका। हम उसे बदल नहीं सकते, न ही उसे मिटा सकते हैं। आज एक नई शुरुआत है। जीवन का जितना समय भी बचा है, उसका हमें सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए। अगर हमने अतीत में कोई गलत काम किया है तो उनकी फिक्र में और समय बर्बाद न करें। आओ हम वर्तमान क्षण का सर्वोत्तम उपयोग करें ताकि इंसानी जिस्म में आने का फायदा उठा सकें।

आज वसंत के इस दिन हम एक नई शुरुआत करें। संत कृपाल जी महाराज अक्सर कहा करते थे कि हर सुबह जब हम उठते हैं, वह एक नई शुरुआत है। जब हम

रात को सोते हैं तो पता नहीं कि जागेंगे कि नहीं। हर सुबह जब उठते हैं तो हमें प्रभु का धन्यवाद करना चाहिए- यह सुनहरा अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद, हमें इंसानी जिस्म देने के लिए धन्यवाद।

प्रभु हम पर दयालु रहा है। हमें चौरासी लाख योनियों में से कोई भी अन्य योनि मिल सकती थी। प्रभु ने हमें इंसानी शरीर दिया जो कि संपूर्ण सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है, सरताज योनि है। इस जिस्म में हमें वे सब पदार्थ मिले हैं, जो चाहिए अपने आप को जानने के लिए और प्रभु को पाने के लिए। हमें इन सब का सदुपयोग करना है।

एक संत अक्सर कहते थे, अगर हम बीमार हों और डॉक्टर से दवाई ले आएं, पर दवाई को अलमारी में रख दें, उसे खाए नहीं तो बीमारी कैसे ठीक होगी। ऐसे ही, हमारी आत्मा प्रभु से बिछुड़ी हुई है और प्रभु ने कृपा करके हमें इंसानी जन्म दे दिया है। आओ, हम प्रभु की आंतरिक ज्योति पर ध्यान टिकाकर और सदाचारी जीवन जीकर इस अवसर का फायदा उठाएं।

चुटकुले

1. लड़का- तुम्हारा नाम क्या है
लडकी- SILENT LADY
लड़का- ये कैसा नाम है
लड़की (शर्माते हुये) हिंदी में- ''शांति बाई''!!

2. कब्रिस्तान के आगे दो व्यक्ति बात कर रहे थे-
'कितने आराम से सो रहे हे ये लोग'
उतने में एक मुर्दा खड़ा हो गया और बोला-
क्यों नहीं सोएंगे, जान दे के जगह ली है!

3. एक कंजूस अपने बेटे को पिट रहा था!
पड़ोसी- क्यों पिट रहे हो बच्चे को?
बनिया- मैंने इसको कहा कि 1-1 सीढ़ी छोड़कर चढ़, चप्पल कम घिसेगी!
नालायक 2-2 सीढ़ी छोड़कर चढ़ा, पाजामा फाड़ लिया!

4. बेटा- 'प्रेमी, बीवी, पत्नी, श्रीमती, औरत, अर्धांगिनी, घरवाली,
इन सब में क्या अंतर है?'
पिता- 'बेटा, इतना मत सोचो, मुसीबत एक नाम अनेक।

प्रस्तुति : पंकज

बीमारी आने न दे पास लेमन ग्रास

लेमन ग्रास टी सेहत के लिए फायदेमंद मानी गई है। ताजी सूखी लेमन ग्रास आज बाजार में आसानी से मिल जाती है। इसके टी बैग भी मिलते हैं दिन में इसके दो कप पीने से स्वास्थ्य में सुधार होता है। लेमन ग्रास कोलोस्ट्रोल को कंट्रोल करती है और ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करती है।

लेमन ग्रास एक ऐसी हर्ब है जिसका संबंध 'पोसिए' घास कुल से होता है। इसमें से नींबू जैसी महक आती है और नींबू जैसा इसका स्वाद भी होता है। लैमन ग्रास का इस्तेमाल पाक विधि में होता है और इसके औषधीय महत्व को देखते हुए इसकी काफी मांग रहती है। यह एंटी बैक्टीरियल, एंटी फंगस और एंटी माइक्रोबायल गुणों से भरपूर है।

इसमें विटामिन-ए, विटामिन-बी-1, बी-2, बी-3, बी-5, बी-6, फोलेट और विटामिन-सी के अलावा पोटेशियम, कैल्शियम, मैगनीशियम् फास्फोरस, कॉपर, जिंक, आयरन, मैगनीज जैसे तत्व पाये जाते हैं, जिसके कारण इसका औषधीय महत्व है। इसमें नींबू जैसी महक आने के साथ-साथ इसमें से रस भी निकलता है।

यह रक्त शिराओं में लिपिड बनने से रोकती है और रक्त धमनियों में रक्त के प्रवाह को तेज करती है। यह शरीर में यूरिक एसिड बनने से रोकती है और पाचनक्रिया को भी दुरुस्त करने में सहायक होती है। इससे किडनी, लिवर, ब्लैडर और पेनक्रियाज की भी सफाई होती है।

कैंसर से बचाव

लैमन ग्रास शरीर की सामान्य कोशिकाओं पर बुरा प्रभाव डाले बिना कई तरह के कैंसर से बचाव करती है। विभिन्न अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंस कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाओं का खात्मा करते हैं।

नयी मां के लिए गुणकारी

स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए लैमन ग्रास बहुत फायदेमंद होती है। यह दूध बढ़ाने में सहायक होती है और नवजात को संक्रमण से बचाती है, लेकिन गर्भावस्था के दौरान इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

पाचन में मदद करे

यह गैसट्रिक अल्सर से बचाव के साथ-साथ पाचनक्रिया को दुरुस्त करती है। कब्ज, अल्सर, डायरिया और अपच, पेट फूलना, पेट दर्द और मतली आने से बचाती है।

अनिद्रा दूर करे

लैमन ग्रास हमारी मांसपेशियों तथा नब्ज को शांत करती है जिससे हमें अच्छी नींद आती है।

सर्दी-जुकाम दूर करे

यह एंटी बैक्टीरियल और एंटी फंगस गुणों से भरपूर होती है। इसकी चाय कफ, बुखार और जुकाम के लक्षणों से राहत दिलाती है। इसमें मौजूद विटामिन-सी हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है।

इंफेक्शन से बचाव

लैमन ग्रास एंटी सेप्टिक का काम करता है। यह यूरेनरी ट्रैक्स, इंफेक्शन, एथलीट फुट, रिंग वार्म से होने वाले संक्रमण से बचाव करता है। इसके अलावा यीस्ट से होने वाले इंफेक्शन में भी फायदेमंद होता है। टाइप-3 डायबिटीज में इससे लाभ होता है। विभिन्न अध्ययनों से ज्ञान हुआ है कि लैमन ग्रास में सिट्रिक की मौजूदगी से टाइप-2 डायबिटीज के रोगियों के लिए फायदेमंद होती है। यह शरीर में इंसुलिन के स्तर को नियत्रित करती है और रक्त में ग्लूकोज के स्तर को बढ़ने से रोकती है।

त्वचा को लाभ

लैमन ग्रास एक स्किन टॉनिक भी है और यह चेहरे के कील-मुहांसों के ऑयल को साफ करके त्वचा को निखारती है। इसकी एस्ट्रीजेंट और एंटी सेप्टिक क्वालिटी त्वचा के तंतुओं को टोनअप करती है।

प्रस्तुति : अरूण योगी

चिकित्सा

एक्यूपंक्चर शरीर में सुधार और प्राकृतिक आत्म-उपचार की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है। ACU बिंदु को प्रोत्साहित (Active) करने के लिए कुछ खास तरीके :- बारीक सुई लगाना, बिंदु पर दबाव, गर्माहट, Stimulation, Moxibution, Cupping आदि हैं। Electro Stimulator द्वारा नर्व्स को आराम दिया जाता है। एक्यूपंक्चर का प्रभाव तंत्रिका तंत्र, अंतः स्तावी प्रतिरक्षा प्रणाली, हृदय प्रणाली, पाचन तंत्र आदि प्रक्रियाओं पर पड़ता है। Sujok चुंबकीय और सुई शरीर की ऊर्जा प्रणाली को बनाये रखती हैं।

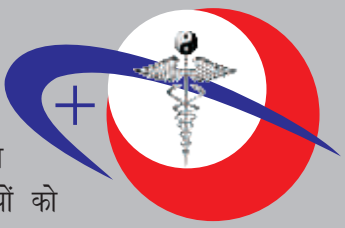

एक्यूपंक्चर दर्द को ठीक करने, नींद, पाचन तंत्र में सुधार और अच्छा महसूस करने में, नसों के दबाव को हटाने में, खून का दौरा बढ़ाने में, रूकावट को हटाने में, मांशपेशियों को मजबूत बनाने में मदद करता है।

-अमित जैन

मासिक राशि भविष्यफल-मार्च 2018

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह विशेष फलदायी नही है। आय-व्यय बराबर रहने की आशा है। सोचे हुए कार्यो में देरी होगी। आप अपनी जिद के कारण नुकसान उठा सकते हैं। मानसिक तनाव में रहेगें। क्योंकि परिवारी जनों में भी सामजस्य बिठाना भी मुश्किल ही होगा।

वृष- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह श्रम साध्य आमदनी कराने वाला है जबकि खर्चो की भी अधिकता ही रहेगी। कुछ जातकों को कार्य के स्थान का अन्तरण करना पड़ सकता है। परिवार में सामजस्य बिठाना कठिन होगा। दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता की कमी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मिथुन- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय के ओर से यह आमदनी सीमित तथा खर्चा अधिक कराने वाला है। इस माह किसी प्रकार के निवेश में पैसा न लगाएं। शत्रु बनते कार्यो में रूकावट डालेगे। परिवार में सम्बन्ध बनाकर रखने होगे। समस्याओं में वृद्धि के कारण मानसिक चिन्ता बढ़ेगी। पक्षियों को दाना डालना श्रेयस्कर रहेगा।

कर्क- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से शुभ फलदायी कहा जाएगा। आय अधिक और व्यय कम होगा किन्तु तीर्थ यात्रा या किसी धर्मानुष्ठान पर व्यय अधिक हो सकता है। कुछ जातकों के भूमि-भवन, वाहन प्राप्ति का भी योग है तो कुछ को सन्तान प्राप्ति का।

सिह- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से लाभालाभ की स्थिति लिए रहेगा। आय तथा व्यय लगभग बराबर रहेगा। कुछ जातकों को अपने कार्य क्षेत्र में बदलाव करना पड़ सकता है। किन्तु मानसिक शान्ति बनी रहेगी। परिवार में सांमजस्य बने रहने से भी संतोष मिलेगा।

कन्या- इस राशि के जातकों के व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह कुल मिलाकर शुभ फलदायी ही कहा जाएगा। कुछ जातक भौतिक वस्तुओं को क्रय भी करेगे। संतान की ओर से किसी समस्या के सुलझ जाने से संतुष्टि मिलेगी। कुछ जातकों को पिछला बकाया पैसा मिल सकता है। परिवार में सामजस्य बिठाने में थोड़ी परेशानी आ सकती है। शनिवार को छाता दान करना व कम्बल इत्यादि दान देना श्रेयस्कर रहेगा।

तुला- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक परिश्रम कराकर अल्प लाभ देने वाला है। शत्रु सिर उठाएंगे और परेशान करेंगे पर कुछ नये लोगों की मित्रता आपके काम आ सकती है। धैर्य से काम लें और क्रोध न करें। कुछ जातक विदेश जाने का भी विचार बना सकते हैं। कुछ नजदीक की यात्राएं भी सम्भव हैं। कोई शुभ समाचार मिलने से मन प्रसन्न होगा। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा।

वृश्चिक- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। वैसे परिस्थितियां सुधार की ओर है। अपने क्रोध पर काबू रखें। अपने साझेदार अथवा सहयोगियों से तालमेल रखकर चलने में ही फायदा है। हां कुछ जातकों का भूमिभवन के लेन-देन का प्रसंग आ सकता है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

धनु- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से कुल मिलाकर आशिक लाभ वाला कहा जाएगा। मास के पूवार्द्ध में किए गए प्रयास सफल होगे। आपको अपने परिश्रम के फल से राहत मिलेगी। योजना क्रियान्वयन की ओर से अग्रसर होगी। प्रतिष्ठित लोग काम आएगे। परिवार में सामजस्य बना रहेगा। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

मकर- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह कुल मिलाकर फलदायक ही कहा जाएगा। कुछ जातकों का पुराना फंसा हुआ पैसा मिलने से खुशी होगी। योजनाओं का क्रियान्वन होगा। शुभ समाचार मिलेगे। किन्तु इस माह कोई नए शेयर आदि की खरीद न करे। परिवार में उत्पन्न हुए मन मुटाव दूर होगें जिससे शांति मिलेगी।

कुम्भ- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से अवरोधों के चलते आमदनी कराने वाला है। अपने व्यय पर नियन्त्रण रखना होगा और कोई भी निर्णय लेने से से भली प्रकार सोचें। छोटी बड़ी यात्राऐं होगी। यात्राओं में सावधानी बरतें तथा किसी अन्जान व्यक्ति से खाने पीने की चीजें न लें। कुछ लोगों को भूमि भवन का लाभ मिल सकता है।

मीन- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से अधिक परिश्रम के पश्चात आंशिक लाभ दिलाने वाला है। किसी नई योजना का क्रियान्वयन होना ही मुश्किल है। परिवार के विषय में ध्यान रहे कि आपके कारण परिवारी जनों को किसी प्रकार का तनाव न हो। छोटी बड़ी यात्राऐं होगी जिनमें सावधानी आवश्यक है। अपमे जीवन साथी द्वारा की गई कहा सुनी को भूलकर उसकी बीमारी की अनदेखी न करें।

-इति शुभम्

निष्काम सेवा किसी पूजा से कम नहीं

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

4 फरवरी 2018, सुनाम, पंजाब में पिछले 30 वर्षों से कार्य-रत मानव मंदिर भवन के इतिहार में निःशुल्क स्वास्थ्य-सेवा केन्द्र के शुभारंभ के साथ एक नए अध्याय की शुरूआत हो गई। मातृ-तुल्या साध्वीश्री मंजुश्री जी, साध्वी चांदकुमारीजी, साध्वी दीपांजी- भगिनि त्रिपुटी की सेवायें पंजाब में इस मिशन के साथ विशेषतः जुड़ी हुई हैं। इसलिए उनकी पुण्य स्मृति में मानव मंदिर निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा केन्द्र का लोकार्पण दसानी परिवार के प्रति श्री चांदरतन सरोज बहिन दसानी, सुनाम शहर के विशिष्ट जनों तथा डॉक्टरों के बीच हर्षोल्लास के साथ किया गया। पूरे पंजाब से समागत उपस्थित सैंकड़ों लोगों ने इस सेवा-कार्य का जोरदार तालियों से स्वागत किया।

इस प्रसंग पर पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा- पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्रीजी के मार्ग-दर्शन में यहां के सेवाभावी कार्यकर्ताओं ने सन् 1989 में इस मानव मंदिर भवन का बीजारोपण किया। मातृ-तुल्या साध्वी मंजुश्रीजी आदि ने उसको सिंचन दिया आज उनकी पुण्य स्मृति मानव मंदिर, सुनाम में एक नया सेवा-कार्य का शुभ आंरभ हो रहा है। मानव मंदिर मिशन का उद्देश्य है साधना और सेवा के माध्यम से मानव को परमात्मा का मंदिर बनाया जाए। जप-तप, योग-ध्यान से हम अपने से जुड़ते हैं, यानि आत्मा-परमात्मा से जुडते हैं। सेवा-कार्यों से हमारी संवेदनाओं का विस्तार होता है, हम पूरे प्राणि-जगत से जुडते हैं। सुनाम मानव मंदिर में आरंभ होने वाले इस स्वास्थ्य-सेवा केन्द्र से सुनाम ही नहीं, पूरे पंजाब में मानव-सेवा का संदेश जाएगा, ऐसा विश्वास है।

आपने कहा- No Profit No Loss के विचार से अनेक संस्थाएं सेवा-कार्य कर रही हैं। पर मेरी जानकारी के अनुसार पूरी तरह निःशुल्क सेवा केन्द्र अपने में यह पहला है। इस पहल के लिए मानव मंदिर, सुनाम के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं। उन डॉक्टरों को भी मैं विशेष आशीर्वाद देता हूं जिन्होंने अपनी निःशुल्क सेवाएं प्रदान करने की स्वीकृति दी है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में पूज्य गुरूदेव के मंगल मंत्रों के पश्चात् सुप्रसिद्ध गायक श्री मनीष खुल्लर ने गुरू-महिमा-भजन गया। सुनाम शहर की अनेक संस्थाओं द्वारा पूज्यवर को शालार्पण तथा अतिथियों का मालार्पण द्वारा स्वागत किया गया। श्री अरूण योगी ने कुंडलिनी योग की चर्चा की। संयोजन श्री जगदीश सिंगला ने तथा

आभार-प्रदर्शन श्री चरणजीत सिंह चन्नाजी ने किया। साध्वी कनकलताजी के मार्ग-दर्शन में कार्यकर्ताओं के अथक सहयोग से समारोह आशातीत सफल रहा। अंत में हर्बल प्रसादम् चाय के साथ मधुर अल्पाहार का जन समुदाय ने खूब आनंद लिया।

पंच-दिवसीय सुनाम-प्रवास में रात्रि में पूज्य गुरूदेव के साथ धर्म-चर्चा तथा प्रातः-मध्यान्ह शिष्य अरूण योगी द्वारा कुंडलिनी-योग शिविर के प्रभावशाली कार्यक्रम रहे। निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा केन्द्र का आकर्षण जुड जाने से पूरे शहर में मानव मंदिर की गूंज का अनुभव किया जा सकता है। प्रेस मीडिया ने मानव मंदिर मिशन के योग तथा सेवा-कार्यों को अच्छा कवरेज दिया।

<u>पूज्यवर की पांच-दिवसीय सौराष्ट्र, गुजरात यात्रा</u>

पूज्य गुरूदेव की इस बार कई वर्षों के पश्चात् पांच-दिवसीय सौराष्ट्र, गुजरात की विशेष धर्म-यात्रा रही। इसमें प्रमुख निमित्त बना श्री राज सौभाग आश्रम, सायला (राजकोट) में श्रीमद् राजचन्द्रजी का प्रतिमा-प्रतिष्ठा समारोह तथा आश्रम प्रमुख श्री नलिन भाई कोठारी 'भाईश्री जी' का अमृत-महोत्सव। भाईश्री जी पूज्य गुरूदेव के साथ वर्षों से विशेष आत्मीयता से जुड़े हैं। अमेरिका-यात्रा में दोनों के अनेकशः स्वाध्याय-प्रवचन साथ-साथ होते रहे हैं। उनकी पचहत्तरवीं वर्ष गांठ पर आयोजित अमृत महोत्सव तथा श्रीमद् राजचन्द्रजी की प्रतिमा प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर भाईश्री जी के प्रमुख शिष्य विक्रम भाई तथा मीनल बेन तथा आश्रम वासियों के विनम्र अनुरोध पर पूज्य गुरूदेव, शिष्य अरूण योगी तथा गुरूकुल छात्र मनीष जैन के साथ 15 फरवरी को सायला आश्रम पधारे। 90 एकड में फैला आश्रम आध्यात्मिक Retreat तथा Seniors Home दोनों उद्देश्य की पूर्ति करता है। चार दिवसीय प्रवास में पूज्यवर के आत्म-स्पर्शी प्रवचन तथा अरूण योगी के योग-प्रयोग की धूम रही। अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक स्थगित करके आश्रमवासियों ने पूज्य गुरूदेव के भजनों-प्रवचनों का आनन्द लिया। अरूण योगी के योगा-टिप्स के साथ-साथ हर्बल-प्रसादम् चाय भी लोगों को खूब भा गई। इस प्रकार इस यात्रा से मानव मंदिर मिशन की खूशबू दूर सौराष्ट्र गुजरात तक फैली। अनेकों आश्रमवासियों ने मानव मंदिर दिल्ली आने का संकल्प व्यक्त किया। सायला-वापसी पर अहमदाबाद मणिनगर में हिसार-निवासी पूज्यवर के प्रति श्रद्धा-शील श्री विजय निर्मला गोयल के सुपुत्र राजीव ऋतु गोयल के घर पर संक्षिप्त प्रवचन तथा आहार लेकर पूज्यवर दिल्ली पधार गए। राजीव ऋतु ने भी अपने पिताश्री की तरह पूरी जिम्मेवारी निभाई।

ऐसे असमय संसार से बिदा नहीं होना था कनक

समाज का चहेता, श्री करणी मां का परम-भक्त तथा ओसवाल सिंघी परिवार का चमकदार सितारा श्री कनकमल सिंघी का सड़क दुर्घटना में 20 फरवरी 2018 को On the spot दुःखद देहावसान हो गया। वे 63 वर्ष के थे। समाज के सुख-दुःख में वे हर समय साथ खड़े रहते थे। सिंघी परिवार के मजबूत स्तंभ थे। विशेष यह है पूज्य गुरूदेव के संसार-पक्षीय चचेरे भाई थे। वचन के खरे थे। कड़वा सच बोलने में हिचकते नहीं थे। फिर भी वातावरण को मधुर रखने में माहिर थे।

उनकी स्मृति-सभा में बोलते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी ने कहा- सिंघी परिवार के पड़ दादा श्री गुलाबचन्द जी की यशोमयी चर्चा समाज में जब-तब आज भी चलती है। अपनी समाज-सेवाओं एवं मधुर-मिलनसार स्वभाव के कारण उस समय के समाज में उनका बड़ा सम्मान था। भाई कनक की जीवन-शैली अपने पड़दादा जैसी थी। श्री गुलाब चन्दजी के तीन पुत्र भीखमचन्द्र जी, महालचन्द जी तथा करणीदान जी थे। आज तीनों पुत्रों का बहुत लम्बा-चौड़ा परिवार होना सहज है। भाई कनक का स्वभाव ऐसा जो सारे परिवारों का जोड़े रखने वाला धागा जैसा था। इसी तरह अपने घड़ियों के व्यापार से सम्बन्धित मित्र-परिवार भी उनका बड़ा था। देशनोक की श्री करणी मां के प्रति अटूट भक्ति उनके मन में थी। उस दृष्टि से मंदिर-परिवार भी उनका बड़ा था। उस अकस्मात् दुर्घटना ने पूरे सिंघी परिवार, मित्र-परिवार तथा मंदिर-दरबार को हिलाकर रख दिया है। इस प्रसंग पर मैं यही कहना चहूंगा-

आग में तपा हुआ खरा सोना था कनक
सबका प्यारा मिलनसार सलोना था कनक
यों तो आनेवाला समय पर जाता ही है
पर असमय संसार से विदा नहीं होना था कनक

ऐसे ही घटना-प्रसंगों को ध्यान में रखते हुए भगवान महावीर ने कहा- मृत्यु किसी की मित्र नहीं होती, न कोई तेज दौड़ से मृत्यु से बच सकता है और न कोई अमर होकर यहां जन्म लेता है, इसलिए शुभ कार्य और धर्माचरण कल पर मत छोड़ो।

आपने कहा- इस कठिन घड़ी में कनक की धर्म-पत्नी श्रीमती सरलाबाई ने जिस समझदारी, ऊंचा मनोबल तथा वैचारिक दृढता का परिचय दिया है, वह अद्‌भुत है।

मैं पूरे परिवार को यही कहना चाहूंगा, परिवार पर आए इस वज्र-आघात के समय मोह-शोक से दूर रहते हुए पूरे हिम्मत-हौसले से उसके यशस्वी गुणों की विरासत को ऊंचाइयों तक ले जाना है। उसके चले जाने से उत्पन्न हुई अपूरणीय क्षति को भरने का संकल्प लेना है।

आपने कहा- मानव मंदिर मिशन के साथ भाई कनक तहे दिल से जुड़े हुए था। पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्री जी का उस पर विशेष आशीर्वाद था। श्री कनक सरलाबाई के मानव मंदिर आने के बाद ही साध्वीश्री अपना संवत्सरी-प्रवचन करतीं। इस दुःखद घड़ी में उन्होंने भी अपना सान्त्वना-संदेश प्रदान किया।

दिवंगत आत्मा की ऊंची गति ओर बन्धन-मुक्ति के लिए मंगल कामना। मानव मंदिर गुरुकुल तथा रूपरेखा पत्रिका परिवार की ओर भाव भरी श्रद्धांजलि।

(2)

श्रीमती आशाबाई दूगड़ का आकस्मिक देहावसान

शांत-स्वभावी श्री संपतमल जी दूगड की पुत्र-वधू तथा सुपुत्र सुरेन्द्र की धर्म-पत्नी श्रीमती आशाबाई दूगड़ का हृदय-गतिरोध से क्षण भर में देहावसान हो गया वे 50 वर्ष की थी। पिछले चौदह वर्षों से कैंसर जैसी असाध्य कष्टदायी बीमारी का आशाबाई ने अपने दृढ मनोबल तथा हंसमुख स्वभाव से पूरा मुकाबला करते हुए हर बार यमराज को खाली हाथ वापस भेज दिया। आखिर यमदेव हार्ट-अटेक के बहाने क्षण भर में आशाबाई को ले जाने में इस बार सफल हो गया। दूगड़जी की धर्म-पत्नी श्रीमती लिछमीबाई तथा पुत्र-वधू आशाबाई लगभग छह महिने के अंतराल में ही काल-धर्म को प्राप्त हो गए। ऐसी घटनाएं पूरे परिवार को झकझोर कर रख दे, यह अत्यंत स्वाभाविक है। किन्तु ऐसे समय ही धर्म और धीरज कठिन परीक्षा होती है। श्री संपतजी दूगड़, सुपुत्र सुरेन्द्र तथा नवीन तथा सुपुत्री सुधा एवं पूरे परिवार ने समता-धर्म धारण करके एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। इस प्रसंग पर पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या महासती मंजुलाश्री जी ने सान्त्वना-संदेश प्रदान किये। दिवंगत आत्मा की ऊर्ध्व-गति तथा बंधन-मुक्ति की मंगल कामना के साथ मानव मंदिर गुरूकुल तथा रूपरेखा पत्रिका की भाव भरी श्रद्धांजलि।

हमारी वीरांगना आशा

जाने या ना जाने कोई
माने या ना माने कोई
पर कायनाथ का जर्रा-जर्रा वाकिफ था
उसकी अथाह वेदना का
फिर भी चल दी मुस्कुराते-मुस्कुराते
इस दुनिया से
हमारी वीरागना।
भुलाने ना देगी हमें अपना अस्तित्व
सौंप गई तीन अनमोल रत्न
वर्षा, नेहा और करण के रूप में
अपने सहभागी को
हंसते हंसते चलदी इस दुनियां से
हमारी वीरागना।
लाख कोशिशों के बावजूद भी
हम भुला ना पायेंगे तुम्हारी मुस्कान
वेदना में मुस्कुराने का हुन्नर दे
गयी हम सभी को
हंसते-हंसतु विदा ले ली इस जहां से
हमारी वीरागना।।

-भारती डागा

(3)

श्रीमती प्रेमबाई बुच्चा का दुःखद निधन

सरदारशहर निवासी, असम प्रवासी सेवाभावी श्री बच्छराजजी बुच्चा की धर्म-पत्नी श्रीमती प्रेमबाई बुच्चा का पिछले दिनों दुःखद निधन हो गया। वे 60 वर्ष की थी। पिछले कुछ महिनों से कैंसर जैसी कष्टदायी बीमारी से जूझ रही थी। उनके सुपुत्र दीपक विकास और आकाश ने उनकी सेवा-चिकित्सा में कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन लाख कोशिशों के बाबजूद श्रीमती प्रेमबाई को बचाया नहीं जा सका। यह परिवार मानव मंदिर मिशन के साथ पूरी आत्मीयता से जुड़ा हुआ है। पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या महासती मंजुलाश्री जी ने अपने सान्त्वना-संदेश में दिवंगत आत्मा की ऊंची गति तथा बंधन-मुक्ति की मंगल कामना की। परिवार इस दुःखद घड़ी में वीतराग-प्रभु की वाणी पर अपना मन टिकाते हुए समता-धीरज को धारण करे। दिवंगत आत्मा के प्रति मानव मंदिर गुरूकुल तथा रूपरेखा पत्रिका परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

-26 जनवरी के अवसर पर पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज के सानिध्य में देशभक्ति से ओत-प्रोत मानव मंदिर गुरूकल के बच्चे। साथ में हैं महासती मंजुलाश्री जी महाराज, साध्वी कनकलताजी, साध्वी समताश्री जी, साध्वी वसुमति जी, योगी अरूण एवं किरण तिवारी आदि।

-मानव मंदिर परिसर दिल्ली में ह्यूष्टन, अमेरिका से समागत श्री प्रवीनजी व श्रीमती स्नेहलता जी मेहता पूज्य गुरूदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। साथ में हैं गुरूकुल के बच्चे।

-मानव मंदिर परिसर दिल्ली में ह्यूष्टन, अमेरिका से समागत श्री विरेन्द्रजी एवं श्रीमती प्रेमजी खेमसरा पूज्य गुरूदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। साथ में हैं मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे।

-सायला आश्रम में अपना उद्‌बोधन-प्रवचन करते हुए पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द जी महाराज।

-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द जी महाराज के प्रवचनों को बड़ी तन्मयता से सुनते हुए साधकों का एक दृश्य। राज सौभाग्य आश्रम, सायला गुजरात।

-श्रीमद् राजचंद्र (परम कृपालुदेव) की प्रतिमा का अनावरण करते हुए पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचंद्रजी महाराज, श्री नलिनजी (भाईश्री जी) व अरुण योगी जी। राज सौभाग्य आश्रम, सायला, गुजरात।

-पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचंद्र जी महाराज व पूज्य भाईश्री नलिन भाई जी का आत्मीय मिलन, राज सौभाग्य आश्रम, सायला गुजरात।

(1) गुरू घासीराम केन्द्रीय विश्व विद्यालय विलासपुर की कुलपति श्रीमती अंजिला गुप्ता पूज्य गुरूदेव जी और महासती मंजुलाश्री जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। साथ में हैं श्री अंकुर गुप्ता, अरूण योगी व सोहन जी। मानव मंदिर परिसर, दिल्ली।

(2) राज सौभाग्य आश्रम सायला, गुजरात में साधक श्री विक्रम भाई शाह व साधिका श्रीमती मीनल बहन शाह का अंग वस्त्रम द्वारा अरुण योगी बहुमान करते हुए।

-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महराज के सान्निध्य में निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा केन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर श्री चांदरतन सरोज दसानी डॉक्टरगण, मानव मंदिर मिशन सुनाम के कार्यकर्तागण, समाज के विशिष्ट जन आदि।

-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महराज के नागरिक अभिनन्दन समारोह पर उपस्थित श्रद्धालुओं का एक दृश्य व मंच पर विराजमान हैं पूज्य गुरूदेव (मध्य), साध्वी कनकलताश्रीजी, (बायें) व श्री मनीष खुल्लर (दायें), मानव मंदिर परिसर सुनाम।

-योगी अरूण सुनाव वासियों को कुंडलिनी योग व ब्रह्म क्रिया करवाते हुए। मानव मंदिर मिशन परिसर सुनाम, पंजाब।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus

Since 1994

.....The Wellness Center

Bootox your brain with special naturopathy Therapy as a brain detoxification programme

Is your brain helping you to stay healthy ?

Do not be afraid of changes

Detox Your Brain at Sevadham Hospital

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया